मिथकों को तोड़ती महिलाएँ

डॉ. दयानन्द मेहता

हमारे कई सामाजिक आचरण मिथकों से प्रभावित हैं। भारतीय महिलाओं का तो सम्पूर्ण जीवन मिथकों से प्रभावित है। कई मामलों में तो हमारे समाज का पारंपरिक मिथक महिला जीवन को नियंत्रित करता दिखता है। मसलन, महिलाओं को समाज अबला समझता है इसलिए एवं संरक्षित रखने का प्रयत्न किया जाता है। उसे पराए घर की वस्तु एवं घरेलु प्राणी समझा जाता है। उससे 'सीता भूमिका' की अपेक्षा की जाती है। मातृत्व में उसके जीवन की सर्वोच्च सार्थकता समझी जाती है। लेकिन यह देखना दिलचस्प है कि आज बदलाव की बयार बह रही है। इस बदलाव का नेतृत्व स्वयं महिला ही कर रही है। दूसरे शब्दों में, महिलाएँ आज मिथकों को तोड़ रही हैं। अब वह अपनी मौलिक प्रतिभाओं और स्वाभाविक आकांक्षाओं का जबरदस्त प्रकटीकरण कर रहीं हैं यह आलेख भारतीय महिलाओं द्वारा पारंपरिक मिथकों के तोड़े जाने का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है।